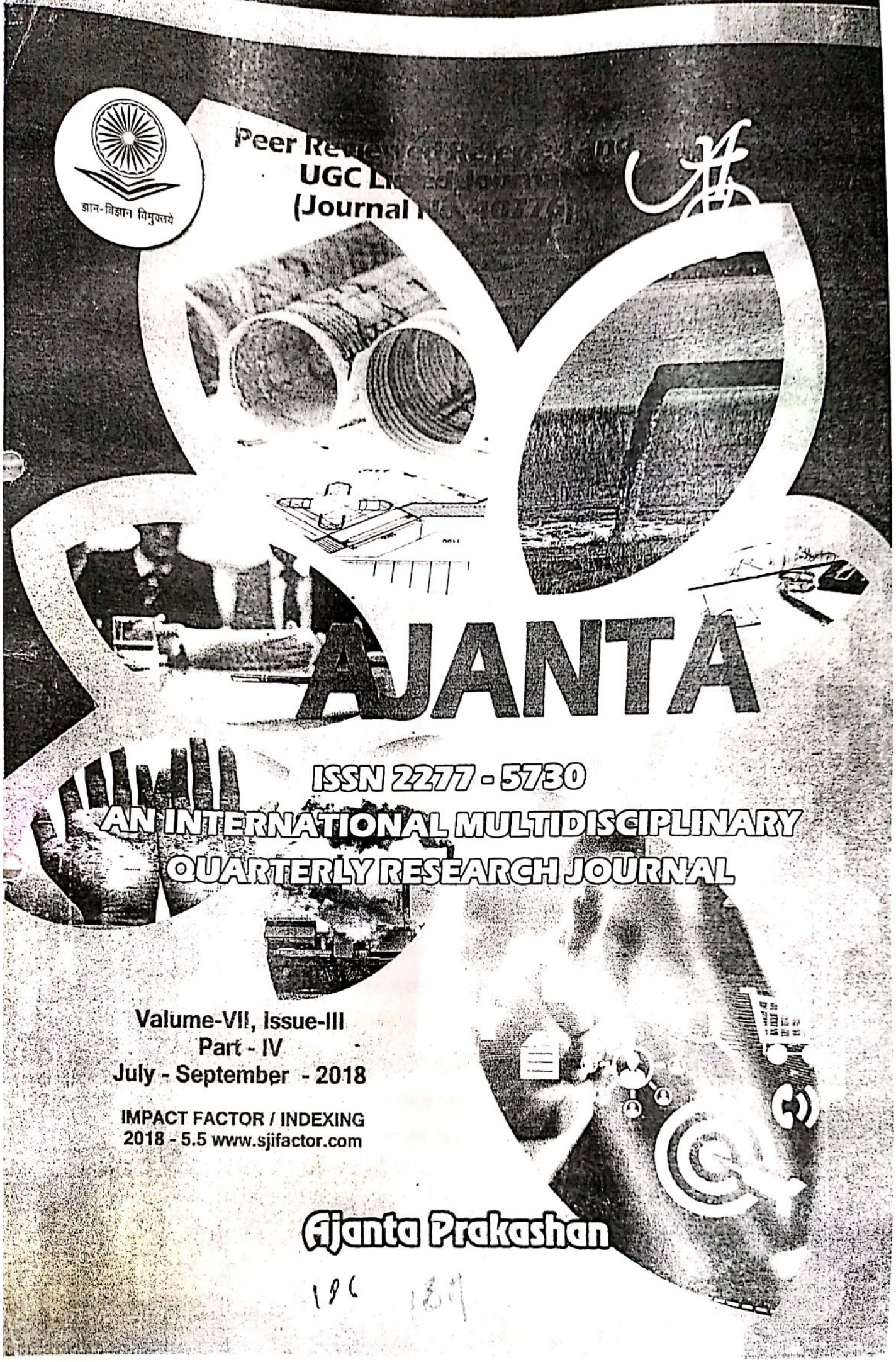

Peer Re...
UGC Li...
(Journal ...)

AJANTA

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Valume-VII, Issue-III
Part - IV
July - September - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5 www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Scanned with CamScanner

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR -5.5 (www.sjifactor.com)

२३. जीवन कौशल शिक्षा उम्मीद की नई किरण एक चिकित्सक अभ्यास

प्रा. डॉ. कविता साळुंके
सहयोगी प्राध्यापक
कु. ज्योती लष्करी
पीएच.डी. संशोधक विद्यार्थी, शिक्षणशास्त्र विद्याशास्त्र य.च.म.मु. विद्यापीठ नाशिक.

विषय प्रवेश

मनुष्य होनां अपने आप में जीवन कौशल शिक्षा को जन्म देता है। अन्य जीव अपनी नैसर्गिक क्षमताओ को स्वयंम ... लेते है,पर मानव होनेका मतलब है – हमारी भाषा प्रयोग करनेकी क्षमतासोचने की क्षमता,तर्क,स्वायत्त होणे की ... आदी।यह क्षमता सभी मानवो में समान रूप से नही होती। अगर होती भी है तो हमे यह क्षमता का उपयोग ... सिखना पडता हे।वास्तव में मानव के शिशु इतने अपरिपक्व होते है की उन्हे खुद के भरोसे छोड दिया जाये और ... का मार्गदर्शन और साह्यता ना मिले तो वे उन मुलभूत क्षमतओको भी हासील नही कर पाएंगे जो उनके भौतिक ... के लिए आवश्यक है।इसलीय हमें जरुरत होती है – जीवन कौशल्य शिक्षा की।

आज के बदलते समाजिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत व्यक्तिगत स्वतंत्रता,विवाह मातुत्व,पितृत्व,परिवार और शिक्षा ... संकल्पनाएं बदलती गई। संयुक्त परिवार एकल परिवारो में परिवर्तीत होने लगे। इस आधुनिक समाज के उदभव ... समस्याओ नें भी समांतर रूप से जन्म लिया।प्रगती व उन्नती के इस मार्ग पर जीवन भी समुचित ढंग से विकास ... शिक्षा के क्षेत्र में भी नएं आयाम जुडे । अंततः शिक्षा का उद्देश यही है की विद्यार्थी का ... बौद्धिक,भावनिकएवं शारीरिक विकास हो,जिससेवह अपने जीवन को आनंद,शांतीपूर्ण आरोग्यदायी एवं ... रूप से व्यतीत कर सके।

जीवन कौशल शिक्षा का इतिहास

विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO)के एक शोध के अनुसार आनेवाली पिढी मनोरुग्णोकी होगी। ऐसा ही सर्वेक्षण ... संयुक्त राज्य अमेरिका कि येल युनिवर्सिटी के सेंटर फॉर इमोशनल इंटेलीजंन्स,'क्लेरमान्त मैक्केना ... 'बर्कले ग्रेटर गुड साइंस सर्विस सेंटर;और कुछ अन्य संस्थाओने किया। जिनके अनुसार सोशल साइटस पर ... के सबसे गुगल उपभोक्ता की सूची में अमेरिका ऑस्ट्रेलिया,मिडल इस्ट के कुछ देश,कॅनाडा और जापान के साथ ... शामिल है।मगर इस अनुसंधान के पहले ही अंत:विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दस मुलभूत जीवन कौशल्योंका चयन ... जिने के लिए आवश्यक कौशल। जिनके व्दारा व्यक्ती विद्यार्थी अपनी क्षमता का योग्यतम उपयोग करते हुए ... आनेवाली समस्यांओ,कठीनाइयो का हल ढूँढकर सकारात्मक रूप मे अपनी दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ती कर ... जीवन जिने की कला भूलता जा रहा इंसान जो खुद का परिवार होते हुवे भी यंत्रोसे दोस्ती कर अपना

127 189

मानसिक संतुलन खोता जा रहा है। इन बातो को ध्यान में रखते हुए जीवन कौशलों का चयन करने हेतु W.H.O,UNEPA,UINCEF इन तीन संगठना एकत्रित हो कर एक साथ बैठकरचिंतन और गहरी सोच से एक सार्वजनिक कार्यकम निश्चित किया वह वर्ष था १९९३ इसीवर्षजीवन कौशल शिक्षा का जन्म हुआ।कौशल्य तो बहुत है मगर जो मानव के ज़ीवन उपयोगी है वह जीवन कौशलो का चयन किया गया उसके बाद WHO ने १९९७ में मुलभूत जीवन कौशल दुनिया के सामने दिये ।वह हे १) स्वयं की पहचान २)समअनुभूती ३)समस्या का समाधान ४)निर्णय क्षमता ५)प्रभावशाली विचार –विमर्श ६)गहन और विश्लेषणात्मक विचार ७)पारस्परिक सहसबंध ८)रचनात्मक विचार ९)भावनांओकासमायोजन १०) तणाव का समायोजन इन जीवन कौशलो का भारत की स्कुल शिक्षा के अभ्यासक्र,पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक वर्ष २००४ के बादमें शामिल किया गया।

२. जीवन कौशल शिक्षा का अर्थ और उद्देश

" जीवन कौशल शिक्षा का मतलब हे व्यक्तीको जीवन जिने की कला सिखना ।"

जीवन कौशल शिक्षा मनोवैज्ञानिक क्षमताए है।जो वैक्तीको खुद को साबित करनेमे सक्षम करती हे ।

WHO"जीवन कौशल को "अनुकुली और सकारात्मक व्यवहार की क्षमताओ के रूप में परिभाषित करत है। ऐसी क्षमताओ का विकास जो व्यक्तीको भविष्य में आनेवाली चुनौतीयो का सामना करनेमे सक्षम बनाये"।

युनिसेफ जीवन कौशल शिक्षा को 'एक व्यवहार परिवर्तन या व्यवहार विकास के रूप में परिभाषित करता हे ।

DEFINING LIFE SKILLS

"Life Skills Education is designed to facilitate the practice and reinforcement of psychosocial skills in a culturally and developmentally appropriate way,it contributes to the promotion of personal and social development,the prevention of health and social problem,and the protection of human rights"

उद्देश

१) जीवनकौशल का दृष्टीकोन न केवलं ज्ञान बांटने पर लक्षित है अपितु इसका लक्ष्य व्यवहार को बदलना तथा अंर्तव्यक्तीयकौशल को विकसित करना है! जिससे युवांओ में बेहतर स्वस्थ चयन करने,नकारात्मक दबावो का विरोध करना तथा जोखीमपूर्ण व्यवहार से बचने के उत्तरदायित्व कि क्षमता को बढाया जा सके!

२) जीवन कौशल शिक्षा युवाओ का अधिकार है ! क्योंकी यह उन्हे ज्ञान देती है!और उन्हे स्वय को शोषण,एचआईवी/एड्स से बचाव करणे हेतू उचित कौशल्य प्राप्त करणे योग्य बनाती है!

३) जीवन कौशल वो सकारात्मक योग्यता है जो व्यक्तीको रोजमर्रा की जरुरतो तथा कठ्नाईयो से जुजने में समर्थ बनती है!जीवन कौशल हमारी सामाजिक सफलता और लम्बी अवधी की ख़ुशी एवं सुख के लिएं आवश्यक है!

४) जीवन कौशल शिक्षा वेक्तीको "क्या करना है,क्यो करना है,कैसे करे,कब करे"तार्किक प्रक्रिया के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है!

५) रोजमर्रा कि जिंदगी में आनेवाली समस्याओ सुलझाने केलिए सक्षम बनाना।

६) छात्र को स्वय निर्णय लेने के लिये सक्षम बनाना।

७) छात्र की सोच को दूरदर्शी सोच बनाना।

८) छात्र में छीपी सभी सक्षमताओ काविकासहीजीवन कौशल्य शिक्षा का उद्देश हे!

३.जीवन कौशल शिक्षा देणे में भारत देश कि स्थिती

भारतीय विद्यालय शिक्षा बोर्ड मंडल (काब्से) की पहली बार राज्य मे आयोजित महत्वपूर्ण बैठक में कक्षा ९वी से १२ वी तक के विद्यार्थीयो के बीच जीवन कौशल्य शिक्षा को लागू करणे पर जोर दिया !काब्से के संयुक्त सचिव पुरणचंद ने बिहार बिद्यालय परीक्षा समिती के सभासद में बैठक को संबोधित करते हुए बताया की छात्र में किशोर अवस्था महत्वपूर्ण पडाव है,जहा उनमे तेजी से शारीरिक,मानसिक और सामाजिक विकास होता ही ! इस विकास को जीवन कौशल शिक्षा के मध्याम से वैज्ञानिक बदलाव के साथ- साथ सकारात्मक सोच विकसित करणे से युवाओ में गुणात्मक चेतना जागृत करने में मदद मिल सकती है

यह आयोजित बैठक में १५ प्रांतो को आमंत्रित किया गया था मगर इनमे बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, गोवा, पंजाब, उडीसा और जम्मू एवं कश्मीर के बोर्ड के पदाधिकारी ही शामिल है! उन्होने बताया की जीवन कौशल्य शिक्षा पाठ्यक्रम का हिस्सा कैसे बने और किस तरीकेसे इसे लागू किया जाए! यह राज्यो के शिक्षा बोर्ड तथा समन्धित राज्य सरकारोके सुझाव के आधार पर तय किया जाएगा!वैसे तो महाराष्ट्र और पंजाब ने जीवन कौशल शिक्षा को लागू कर दिया हे! भारत देश के कही प्रांतो में जीवन कौशल शिक्षा छात्रो को प्राथमिक स्तर से लेकर विद्यालय तक दि जा रही है! भारत के कइ प्रांतोने स्कुली शिक्षा के पाठ्यक्रम मे जीवन कौशलो को शामिल किया है! इन्ही में से महाराष्ट्र प्रांत ने २००५ मे प्राथमिक स्तर से लेकर विद्यालयी शिक्षा तक जीवन कौशलोको शामिल किया है! CBSC ने भी जीवन कौशल शिक्षा को महत्व देते हुए जीवन कौशल एक स्वतंत्र विषय के रूप और विविध उपक्रम आयोजित कर छात्रो में जीवन कौशलोंका प्रभावित करणे में जुटे हुए है! और NCERT ने भी उच्च शिक्षा लेनेवाले छात्रो के लिये BE.d,ME.d के अभ्यासक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को महत्व पूर्ण स्थान दिया है! इतना ही नाही भारत के कुछ चुनिदा प्रांतो में जीवन कौशल शिक्षा का स्वतंत्र कोर्स भी लिया जा रहा हे .

जीवन कौशल शिक्षा देणे में भारत देश की स्थिती विकसित होणे के मार्ग पर है!(Publish Date:Mon,५ Dec २०११)

४. महाराष्ट्रराज्य के स्कूल शिक्षा के पाठ्यक्रम में जीवन कौशल्योंकी स्थिती

महाराष्ट्र प्रांत में जीवन कौशल्य शिक्षा बच्चो कों प्राथमिक स्तर से दी जा रही है ! कक्षा १ ली से लेकर १२ वी तक पाठ्यक्रम जीवन कौशल्यो को शामिल किया है!और पाठशाला में जीवन कौशल्यो को बढावा देणेवाले उपक्रम लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम आराखडा (NFC)२००५ महाराष्ट्र राज्य में पुर्नरचित अभ्यासक्रम २००४,बच्चो को मुक्तएवं सक्तीचे शिक्षा का अधिकार २००९,महाराष्ट्र राज्य अभ्यासक्रम रूपरेखा नुसार २०१०, नुसारप्राथमिक शिक्षण से पाठ्यक्रम में जीवन कौशल्यो को शामिल किया है! महाराष्ट्र राज्य नें अनुभवजन्य शिक्षा learning By Doing और

151 185

Scanned with CamScanner

learning to Learnसिखने के लिए सिखना और ज्ञानरचनावादी जैसी शिक्षा प्रणाली को आपनाकर आगे बढ़ [illegible] इसी के मध्यम जीवनकौशल्य की शिक्षा देणे का काफी अच्छा प्रयास किया जा रहा है! SCERT नें पुरे महाराष्ट्र [illegible] शिक्षको नें छात्रो कों जीवन कौशल कि शिक्षा कैसे देनी,उनका मूल्यमापन कैसे करना चहिए कोन –कोनसे उपक्रम [illegible] चहिए इसपर शिक्षकों के प्रशिक्षण भी दियाहै! औरजीवन कौशल शिक्षा का मार्गदर्शन करनेवाली कितावें भी तयार [illegible] है!महाराष्ट्र शिक्षा बोर्ड ने जीवन कौशल शिक्षा के महत्व को समझा हैं! इसी लिएमहाराष्ट्र राज्यकी स्थिती जीवन कौशल शिक्षा देणे मे काफी बेहतर साबित हो रही है!

५. जीवन कौशल शिक्षा देणे में शिक्षक कि भूमिका

जीवन कौशल्य शिक्षा देणे में शिक्षक का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है! आज कि रोजमर्रा कि जिंदगी को देखते हुवे शिक्षक ही हे जो छात्रो/बच्चो को सही और गलत की पहचान बता सकता है! शिक्षकको आज माता और पिता की भूमिका भी करनी है!

१) छात्रो के बारेमे पर्याप्त जानकारी रख कर उसकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओ के समाधान में सहयोग करें!

२) अपने छात्रो को निर्णय लेने में सक्षम करें!

३) दैनिक कार्य में अनुभूत कठीनाईयों के समाधान हेतू वैज्ञानिक दृष्टीकोन अपनाए तथा क्रियात्मक अनुसंधान मे समस्या का समाधान करें !

४) शिक्षक समय सारणी के अनुसार अपनी कक्षाओ में जा कर शिक्षण कार्य करें!कक्षा में न जाने की प्रवृत्ती छवी को बिगाडती है!

५) छात्रो को भली भान्ति प्रशिक्षित करके विद्यालय के अच्छे शैक्षिक परिणाम प्राप्त कराने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चहिए!

६) शिक्षक को एक प्रबंधक तथा प्रशासक की भूमिका करनी है!

७) शिक्षक को एक मार्गदर्शक की भूमिका करनी है!

८) शिक्षक एक विशेषज्ञहोता है!

९) शिक्षकनिर्देशक कि भूमिका करता है!

१०) शिक्षक को अपने अध्यापन मे जीवन कौशलनुसार शिक्षा पद्धती प्रयोग करना चाहिय!

११) छात्र जीवन कौशल शिक्षा से प्रभावित हुए है या नही इस जांच करणे हेतू मूल्यमापन करना चाहिय!

६. जीवन कौशल शिक्षा से हो सकते हे बदलाव

जीवन कौशल शिक्षा केमाध्यम भारत के जिस प्रांतो में यह शिक्षा लागू कि गयी है! वहा के छात्रो के वर्तन मे काफी बदलाव दिखाई देता हें!जीवन कौशल शिक्षा पर भारत देश में लगभग [illegible] अनुसंधान किय जा चुके है! उनके मिले नतिजो से जीवन कौशल शिक्षा यह छात्र और समाज के लिएप्रभविनसाबित हो रही है! और कुछ शिक्षको की मुलाकात

172 150

Scanned with CamScanner

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR -5.5 (www.sjifactor.com)

लेने बाद पताचलता है शिक्षको को छात्रो के वर्तन में परिवर्तन दिखाई देता है! छात्र खुद स्वंय निर्णय लेने लगे हे! समस्या का समाधन करणा सिख रहे है! भावनांओपरं काबू पना सिख रहे है!

नई पाठ्यपुस्तक भीं बच्चो के जीवन कौशलों को विकसित करणे हेतू परिवर्तीत की गयी है!यह बच्चो की रचनात्मकता व जिज्ञासा को जीवित रखते हुएउन्हे पुस्तकोंसे स्वतंत्र अपने परिवेश से जुडते हुएज्ञान के निर्माण की स्वाभाविक प्रकिया की और ले जाती है!कौशलोंसे प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में यह सत्य है की यदि हम बच्चो को किन्ही कौशलों में निपुण करना चाहते है!तो यह काम भी बिना उस काम में बच्चो को संलग्न (शामिल) किए सिखाना संभव नही है!

ग्रंथसूची

- Bhavaneswane Lakshmi, (2009):,'Life Skill Education,' University News
- Meena.(2010):,'The Need for Life Skills Cented Education Via Life Skills Paradigm,' University News.
- Swamy Raju (2011) Life skill Education:Ruby in The crown of Human Development,'University news.
- Best,John,J.W.,Research in Education,' Prentic Hall of India Private Limited,New Deihi.
- .Jhon W.creswell.,(2009):,'Research Design,'SAGF pulication pvt.Ltd,(Third Edition) New Delhi.
- Jhon W.creswell.,(2012):,'Education Research,'peorson Education,' icn, Boston, U.S.A. (fourthEdition).
- पांडेय पूर्णिमा, जीवन शिक्षण एप्रिल (२०१४): जीव्रन कौशल- एस दृष्टीक्षेप.
- https://www.weareteachers.com/9-awesome-classroom-activities-that-teach-job-readiness-skills/
- https://hindi.whiteswanfoundation.org/article/the-importance-of-teaching-your-adolescent-
- life-skilhttp://nairoshni-moma.gov.in/WriteReadData/PdfDocument
- https://www.edhelper.com/life_skills.htm
- www.edurite.com/
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%

Scanned with CamScanner